नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और चुनौतियॉ

जलेन्द्र कुमार शर्मा

विश्व अर्थव्यवस्था में विकसित राष्ट्रो के समान विकासशील राष्ट्रो का अपना योगदान है। किन्तु नवीन आर्थिक परिदृश्य में कई नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के मार्ग में चुनौतियां सम्मुख आ खड़ी है। विश्व आर्थिक जगत में समान आर्थिक अवसरो, बन्धुत्व, सहयोग, एवं मानव विकास के लिए उनका निराकरण किया जाना आवश्यक है। समस्याओं के बिना निराकरण के नवीन आर्थिक जगत में भारत सहित तमाम विकासशील देशो को समान आर्थिक मंच पर लाना एक चुनौती है, जिनका अध्ययन किया जाना तत्कालीन परिवेश में आवश्यक है।

संकेताक्षर :– नव्य विश्व परिपेक्ष्य में अर्थव्यवस्था और समाधान

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एशिया, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के देश एक–एक कर स्वाधीन होते गए। इन्हें राजनीतिक स्वतन्त्रता तो मिल गई किन्तु आर्थिक दृष्टि से ये देश सही मायने में स्वतन्त्र नहीं थे। विश्व अर्थव्यवस्था का एक ऐसा ढ़ॉचा स्थापित हो चुका था जो न्याय एवं लोकतन्त्र के सिद्धान्तों पर आधारित नहीं था। नवोदित देश नव–उपनिवेशवाद के शिकंजे में फंसते जा रहे थे।

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था स्थापित करने का सर्वप्रथम प्रयास द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के समय ब्रेटनवुड्स में किया गया था वास्तव में ब्रेटनवुडस में प्रस्तावित 'आर्थिक व्यवस्था' अमरीका की ही योजना थी जिसे अन्य प्रमुख औद्योगिक देशों का समर्थन प्राप्त था। अतः यह 1960–70 के दशक की विश्व की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं थी। तीसरी दुनिया के विकासशील देश इसकी कमियों को उजागर करते हुए वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के निर्माण की मांग करने लगे। इस मांग के प्रतिउत्तर में 1मई 1974 को संयुक्त राष्ट्र संद्य के छठे विशेष अधिवेशन में नई अर्न्तराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था ;छप्व्द्वस्थापित करने की घोषणा की गई। 'नीओ' की उद्घोषणा अंकटाड के अन्दर कार्यरत समूह जी–55 और विश्व राजनीतिक मंच पर कार्यरत निर्गुट आन्दोलन का प्रत्यक्ष परिणाम थी।

नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था ;छप्व्द्वकी उद्घोषणा के उद्देश्यों को तीन भागों में बॉटा जा सकता हैः–

1. **व्यापार सम्बन्धी उद्देश्यः–**
   - (अ) व्यापार को उत्तरोत्तर मुक्त कर विकसित राष्ट्रो के संरक्षवाद को समाप्त किया जाए।
   - (ब) विकसित राष्ट्रो द्वारा अपनी आवश्यकता की अधिकाधिक वस्तुओं को विकासशील राष्ट्रो से आयात किया जाना चाहिऐ।
   - (स) विकासशील राष्ट्रो को निर्यात–सक्षम बनानें के लिए औधोगिक राष्ट्रो द्वारा उनके औधोगिकरण में सहयोग दिया जाना चाहिए।
2. **सहयोग सम्बन्धी उद्देश्यः–**
   - (अ) विकसित राष्ट्रों को विकासशील राष्ट्र की आर्थिक उन्नति और उनके पिछडेपन को दूर करने के लिए प्रौधोगिकी और मौद्रिक सहयोग दिया जाए।
   - (ब) विकासशील राष्ट्रो को ऋण के भार से मुक्ति दिलाई जानी चाहिए।
   - (स) विकसित राष्ट्रो द्वारा विकासशील राष्ट्रो में कार्यरत अपने MNCs के कार्यकलापों पर रोक लगानी चाहिए।
3. **मौद्रिक सम्बन्धी उद्देश्यः–**
   - (अ) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं जैसे–विश्व बैंक, IMF आदि के निर्वाचन ढॉचे में परिवर्तन किया जाए।
   - (ब) अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा अधिकाधिक वित्त विकाशील राष्ट्रो को सस्ती दरों पर तथा आसान

शर्तो पर दिया जाना चाहिए।

वास्तव में युद्धोपरान्त उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के बन्धन कमजोर पड़ते जा रहे थे और अल्पविकसित देश राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ ही आर्थिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त करना चाहते थे। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अर्थशास्त्र की शब्दावली में 1970 के दशक में एक नयी अवधारणा का प्रचलन हुआ जिसे नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के नाम से जाना जाता हैं। UNO के दस्तावेजो और अन्य प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावजो में इस अवधारणा का बराबर प्रयोग किया जाता रहा है।

नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक–व्यवस्था अर्थ

NIEO अवधारणा से अभिप्राय है नवोदित विकासशील देशों के मन में इस बात की उत्कण्ठा कि उनका आर्थिक विकास पूॅजीवादी देशों की इच्छा पर निर्भर न रहे, बहुराष्ट्रीय निगम उन्हे कच्चा माल उत्पन्न करने वाले उपनिवेश न माने। विश्व आर्थिक व्यवस्था का संचालन एक दूसरे की सम्प्रभुता का समादर अहस्तक्षेप तथा कच्चे माल पर उत्पादक राष्ट्र का पूर्णाधिकार आदि सिद्धान्तों पर हो।

वस्तुतः ये सिद्धान्त विकासशील राष्ट्रों के हितो के अनुकूल है, चूॅकि विश्व के आधे से भी अधिक कच्चे माल पर उनका क्षैत्राधिकार हैं। औचित्यपूर्ण आर्थिक स्वाधीनता की स्थापना के लिए तीसरी दुनिया के राष्ट्रों ने नवीन अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण की मांग की है। विकासशील देशों को नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण की काफी आशाऍ है चूॅकि निवर्तमान विश्व आर्थिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण उनके हितों के अनुकूल होने की संभावना है।

निवर्तमान नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के समक्ष समस्याऍः–

(अ) विकासशील राष्ट्रों की विदेशी व्यापार सम्बन्धी समस्याऐंः–

विकान्सोमुख देशों के विश्व व्यापार प्रतिशत में तीव्र गति से कमी हुई हैं। 1948 में इन देशों का प्रतिशत विश्व आयात में 31.5 तथा निर्यात में 32.0था। 1972 में आयात एवं निर्यात का प्रतिशतः क्रमशः 18.6 एवं 20.0 हो गया था। 2010 में यह और घटकर क्रमशः 13.4 तथा 16.0 हो गया।

इस प्रकार बढ़ते हुए विश्व व्यापार में विकासोन्मुख देशों का योगदान क्रमशः घट रहा है। दूसरे शब्दो में कहा जा सकता है कि विकसित देशों का व्यापार अपेक्षाकृत तेजी से बढ़ा है। विकासन्मुख देशो में आय वृद्धि के साथ–साथ मशीने, प्लाण्ट, पूॅजीगत साजोसामान एवं विलासिता की वस्तुओं की मांग बढ़ती है जो आय वृद्धि से अधिक अनुपात में होती है। इसलिए विकासशील देशों के आयात में तीव्र गति से वृद्धि होती है। परन्तु निर्यात में उसके अनुरूप वृद्धि नहीं हो पाती है। विकासशील देशो के उत्पाद को विकसित देशों के उत्पाद से प्रतिस्पर्द्धा करनी पड़ती है। चूॅकि अर्द्व विकसित राष्ट्रों द्वारा बनायी गई वस्तुऍ अपेक्षाकृत निकृष्ट किस्म की एवं महंगी होती है। इसलिए ये राष्ट्र विकसित राष्ट्रो के साथ प्रतिस्पर्द्धा में नहीं टिक पाते। अल्पविकसित देशों में आधारभूत ढॉचा कमजोर होता है तथा साथ ही व्यापार की शर्ते प्रतिकूल होने के कारण व्यापार का लाभ विकसित देश ही उठा रहे हैं।

(ब) ऋण ग्रस्तता की समस्याऍः–

व्यापार में विकसित देश कच्चे मालों, खनिजों और कृषि पैदावारों के दाम घटाकर बीजक में माल की मात्रा कम दिखाकर अपने पक्के मालों के दाम बढ़ाकर, मात्रा ज्यादा दिखाकर तथा तरह–तरह की संरक्षणवादी युक्तियों का सहारा लेकर अपनी पूॅजी निवेश पर वार्षिक लाभ बढ़ाती रहती है। इससे विकासशील देशों के वित्तीय साधनो का क्षय होता जाता है और वे तरह–तरह के कर्ज लेने पर मजबूर होते हैं। इस कर्ज पर पश्चिमी बैंक ब्याज दरे लगातार बढ़ा रहे है। साथ ही डॉलर की कीमत भी बढ़ती जा रही है। जिससे ऋण की राशि अपने आप बढ़ रही है। अब स्थिति यह है कि ऋण के रूप में दी गई पूॅजी विकासशील देशों के आर्थिक शोषण का मुख्य साधन बन

गई हैं। विकासशाील देश कर्ज और ब्याज की अदायगी के लिए बार–बार कर्ज लेने को विवश हो रहे है जिससे उनकी ऋण ग्रस्तता बढ़ती जा रही है।

(स) हथियारो के होड की समस्याः–

हथियारो की होड खतरनाक ही नही होती है, अपितु अपव्ययी भी होती है। विश्व में वार्षिक सैनिक व्यय 8.5 खरब डॉलर से अधिक हो गया है। जिसमे से 1.5 खरब डॉलर विकासशील देशों द्वारा व्यय किया जाता है। हथियारो की होड न सिर्फ विकासशील देशों के संसाधनों को चट कर जाती है, अपितु उन्हे विदेशो से प्राप्त सहायता के परिमाण और कार्य क्षममा को नकारात्मक रूप में प्रभावित भी करती है, साथ ही सहायता राशि में वृद्वि करने के विचार के क्रियान्वयन में बाधा डालती है।

ब्राहय–आन्तरिक सैन्यीकरण की शुरूवात हथियारो की होड का एक ऐसा चक्र आरम्भ कर देती है जो क्षेत्र–विस्तार, लागत तथा संभावित विध्वसंक परिणामों की दृष्टि से अभुतपूर्ण होगा। इससे निरस्त्रीकरण की अवधारणा , तृतीय विश्व के दर्जनों देशो की विदेशी ऋण से मुक्त होने की आशाओं, अपने आर्थिक पिछडेपन को समाप्त करने की आशाओं, रोग एवं निरक्षरता से मुक्ति पाने के करोडो लोगो के स्वप्नो नाभिकीय सर्वनाश की दिशा में तेजी से बढते जाने आदि को रोकने के समस्त विश्व के लोगो को गहरा आधात लगेगा।

साम्राज्यवादी ताकते विश्व स्तर पर हथियारो की होड शुरू करने के बाद एशिया, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिका के नए देशो को इसमें घसीट रही है। इसका मुख्यकारण है कि साम्राज्यवाद अपने लिए ऐसी स्थितियॉ चाहता है, जिनमें वह विकासशील देशों के अंदरूनी मामलों में मुख्य रूप से हस्तक्षेप कर सके। खनिज संपदा से धने इलाको मे अपना राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक प्रभत्व बनाये रखने तथा नवोदित देशो की जनशक्ति और प्राकृतिक संपदा का नव उपनिवेशवादी शोषण करता रहे।

(द) गरीबी, बेरोजगारी व मुखभरी की समस्याएॅ

तृतीय विश्व की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याये नितान्त गंभीर है। आई.एल.ओ. के अनुसार इन देशो में 50 करोड से अधिक व्यक्ति बेरोजगार है। औधोगिक विकसित देशो मे बेरोजगारो के मुकाबले यह संख्या 70 गुना अधिक है। न्छव् के ऑकडो के अनुसार एशिया,अफ्रीका और लेटिन अमेरिका मे 85 करोड व्यक्ति गरीबी भूख और कुपोषण कर सामना कर रहे है। 70 करोड व्यक्ति अशिक्षित है। अमीर देश गरीबो की कोई चिन्ता नही करते । विकसित देशों की साम्रज्यवादी नीतियों विश्व में गरीबी बनाये रखने तथा करोड़ो लोगो की भूख, अशिक्षा और बीमारी में बनाये रखने का कार्य कर रही है।

उपर्युक्त समस्याओं के वातावरण में तृतीय विश्व अथवा दक्षिणी राष्ट्रो का आर्थिक भविष्य क्या होगा? अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष IMF विश्व बैंक और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने ही अपनी हाल की वार्षिक रिपोर्टो में जहॉ यह इंगित किया गया है कि विकसित राष्ट्रो की बेरोजगारी और मंदी की समस्याये शनै–शनै समाप्त हो रही है। वहीं दूसरी और ये आख्याएँ विकासशील राष्ट्रो के भविष्य को लेकर बहुत आशान्वित नहीं है।

दूसरे शब्दों में जहाँ एक ओर विकसित राष्ट्रो की विकास दर बढ़ने की संभावना है, वहीं आगामी कुछ वर्षो में विकासशील राष्ट्रों की विकास दर घटने की भी संभावना है। स्पष्ट है कि आगामी वर्षो में उत्तर–दक्षिण ही असमानता ओर भी बढ़ेगी। इन परिस्थतियों में गुट–निरपेक्ष आन्दोलन द्वारा सामूहिक आत्मनिर्भरता ही विकासशील राष्ट्रों के सामने विकल्प रह जाता है। इस दिशा में दक्षिण–एशियाई क्षैत्रीय सहयोग जैसी अवधारणाओं को बढ़ावा देना चाहिए किन्तु ये दक्षिणी राष्ट्र अपने आपसी मतभेद को भुलाकर एक–दूसरे के कितने निकट आएॅगे अथवा प्रयास करेंगे। यह आने वाला समय ही बताएगा।

प्रस्तुत शोद्य पत्र के निर्वचन के बाद अध्ययनकर्ता के अनुसार इस समस्या के समाधान हेतु सुझाव इस प्रकार हैः–

1. विकासशील देशों विशेषकर भारत जौ कि दक्षिण एशिया में एक प्रमुख उभरता हुआ बाजार है, यहां विकास की अनन्त सम्भावनायें है। अतः भारत जैसे देशों को ऋण के भार से मुक्ति दिलाया जाना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र की संस्थाओ को इस ओर पहल करने की आवश्यकता है।
2. विकसित राष्ट्रो को स्वप्रेरणा लेते हुऐ संरक्षणवाद की नीति से बचना चाहिऐ।
3. विकासशील देशो में निर्यात सक्षमता बढ़ाने हेतु वहां की राष्ट्रीय सरकारो को ईमानदारी से काम करने की आवश्यकता है।
4. अर्न्तराष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओ की संरचना एवं कार्य प्रणाली को उदार बनाये जाने की आवश्यकता है।
5. विकासशील राष्ट्रो को सस्ती दरों पर आसान शर्तो के अनुसार विकास हेतु ऋण दिया जाना चाहिऐ।

उक्त सुझावों के साथ नवीन अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और चुनौतियॉ विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत है।

सहायक प्रोफेसर – अर्थशास्त्र
राजकीय कला महाविद्यालय दौसा

संदर्भ सूची –

Agarwal, M.S. - "Regional Economic Cooperation in South Asia, New. Delhi, 1979

Anne, O. Kruegger (ed). - Introduction: in the WTO as an International Organization (Delhi: Oxford University Press, 1999).

Baral, Lokraj -"The Politics of Balanced Interdependence, Nepal and SAARC, New Delhi, 2002.

Economic Survey- 2014-15: The Government of India; New Delhi.

Economic Survey- 2015-16: The Government of India; New Delhi.

Economic Survey- 2016-17: The Government of India; New Delhi.

Asian Development Bank, Asian Development Outlook Manila Phillipines, Oxford University Press, 2003.